नई वाचा-
सम्पूर्ण क्षमा

''सो हे भाइयो, जब कि हमें यीशु के लोहू के द्वारा उस नए और जीवते मार्ग से पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है। जो उसने परदे अर्थात अपने शरीर में से होकर, हमारे लिए अभिषेक किया है, और इसलिए कि हमारा ऐसा महान याजक है, जो परमेश्वर के घर का अधिकारी है। तो आओ; हम सच्चे मन, और पूरे विश्वास के साथ, और विवेक का दोष दूर करने के लिए हृदय पर छिड़काव लेकर ... धुलवाकर परमेश्वर के समीप जाएं'' (इब्रानियों 10:19-22)।

बाइबल में सीनै पर्वत पर व्यवस्था दिए जाने से पहले पापों की क्षमा के बारे में बहुत कम स्पष्ट किया गया है। बलिदान भेंट किए जाते थे; परन्तु उन बलिदानों का सही-सही उद्देश्य प्रकट नहीं किया गया था। कैन और हाबिल की भेंटें (उत्पत्ति 4:3, 4) पाप के लिए होम बलियां हो सकती हैं, परन्तु वे धन्यवाद या स्वेच्छा की भेंटें भी तो हो सकती हैं (लैव्यव्यवस्था 7:12, 16)। नूह (उत्पत्ति 8:20), इब्राहीम (उत्पत्ति 22:13), याकूब (उत्पत्ति 31:54; 46:1), और यित्रो (निर्गमन 18:12) की होम बलियां हो सकता है कि पाप बलियां न हों, परन्तु हम जानते हैं कि अपने बच्चों की ओर से अय्यूब द्वारा दिए गए बलिदान पाप बलियां ही थीं (अय्यूब 1:5)।

व्यवस्था के अधीन क्षमा

व्यवस्था के अधीन जघन्य पापों की सज़ा मृत्यु दण्ड थी।

> परन्तु क्या देशी क्या परदेशी, जो प्राणी ढिठाई से कुछ करे, क्या वह यहोवा का अनादर करने वाला ठहरेगा, और वह प्राणी अपने लोगों में से नाश किया जाए। वह जो यहोवा का वचन तुच्छ जानता है, और उसकी आज्ञा का टालने वाला है, इसलिए वह प्राणी निश्चय नाश किया जाएगा; उसका अधर्म उसी के सिर पड़ेगा (गिनती 15:30, 31)।

लिखा है, ''मूसा की व्यवस्था को न माननेवाला दो या तीन जनों की गवाही पर, बिना दया के मार डाला जाता है'' (इब्रानियों 10:28)। इसका उल्लंघन करने वाले पर दया नहीं दिखाई जाती थी और दण्ड से बचाने के लिए किसी प्रकार का मूल्य चुकाने की अनुमति नहीं थी। हत्या के दण्ड के विषय में व्यवस्था में लिखा था, ''और जो खूनी प्राणदण्ड के योग्य ठहरे उससे प्राण दण्ड के बदले में जुर्माना न लेना; वह अवश्य मार डाला जाएगा'' (गिनती 35:31)।

पाप के लिए बलिदान

गिनती 15 के अनुसार, अनजाने में आज्ञा का उल्लंघन करने वाले लोग क्षमा पाने के लिए बलिदान भेंट कर सकते थे। परमेश्वर ने उन्हें बताया था:

> फिर जब तुम इन सब आज्ञाओं में से जिन्हें यहोवा ने मूसा को दिया है किसी का उल्लंघन भूल से करो, अर्थात जिस दिन से यहोवा आज्ञा देने लगा, और आगे की तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में उस दिन से उस ने जितनी आज्ञाएं मूसा के द्वारा दी हैं, उस में यदि भूल से किया हुआ पाप मण्डली के बिना जाने हुआ हो, तो सारी मण्डली यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देने वाली होमबलि करके एक बछड़ा, और उस के संग नियम के अनुसार उसका अन्नबलि और अर्घ चढ़ाए, और पापबलि करके एक बकरा चढ़ाए, तब याजक इस्राएलियों की सारी मण्डली के लिए प्रायश्चित करे, और उनकी क्षमा की जाएगी; क्योंकि उनका पाप भूल से हुआ, और उन्होंने अपनी भूल के लिए अपना चढ़ावा, अर्थात यहोवा के लिए हव्य और अपना पापबलि उसके साम्हने चढ़ाया सो इस्राएलियों की सारी मण्डली का, और उसके बीच रहने वाले परदेशी का भी, वह पाप क्षमा किया जाएगा, क्योंकि वह सब लोगों के अनजाने में हुआ। फिर यदि कोई प्राणी भूल से पाप करे, तो वह एक वर्ष की एक बकरी पापबलि करके चढ़ाए। और याजक भूल से पाप करने वाले प्राणी के लिए यहोवा के साम्हने प्रायश्चित करे; सो इस प्रायश्चित के कारण उसका वह पाप क्षमा किया जाएगा (गिनती 15:22-28)।

पाप बलि और दोष बलि के नियम लैव्यव्यवस्था 4:1-7:10 में अधिक विस्तार से दिए गए हैं। परमेश्वर ने इस्राएलियों को आश्वासन दिया था कि पाप के लिए बलिदान करने के बाद पाप करने वाले को ''क्षमा किया जाएगा'' (लैव्यव्यवस्था 4:20, 26, 31, 35; 5:10,13,16,18; 6:7; 19:22)। बेशक पाप तो क्षमा किए जाते थे, परन्तु पशुओं का लहू उन्हें क्षमा नहीं करता था। क्रूस पर यीशु की मृत्यु से ही उन लोगों के पापों को क्षमा किया गया जो पहली वाचा के अधीन रहते थे (रोमियों 3:25; इब्रानियों 9:15)।

बैलों तथा बकरों का लहू

नये नियम में स्पष्ट लिखा है, ''क्योंकि अनहोना है, कि बैलों और बकरों का लोहू

पापों को दूर करे'' (इब्रानियों 10:4)। जानवरों के लहू से पाप क्षमा नहीं हो सकते थे, क्या व्यवस्था के इस वाक्य कि ''पाप क्षमा किए जाएंगे'' (उदाहरण के लिए, देखिए लैव्यव्यवस्था 4:20, 26, 30, 35) का अर्थ यह है कि पाप उस समय क्षमा नहीं किए जाते थे बल्कि भविष्य में किसी समय क्षमा होने थे?

पुराने नियम के कुछ वाक्य स्पष्ट सिखाते हैं कि परमेश्वर ने उस समय पाप क्षमा किए थे। परमेश्वर के पास मूसा की प्रार्थना और उसके उत्तर से संकेत मिलता है कि परमेश्वर ने क्रूस से पहले पाप क्षमा किए। ''अब इन लोगों के अधर्म को अपनी बड़ी करुणा के अनुसार, और जैसे तू मिस्र से लेकर यहां तक क्षमा करता रहा है वैसे ही अब भी क्षमा कर दे'' (गिनती 14:19, 20)। बतशेबा के साथ दाऊद के पाप के बाद, नातान ने उसे आश्वासन दिया, ''यहोवा ने तेरे पाप को दूर किया है; तू न मरेगा'' (2 शमूएल 12:13ख)। सुलैमान के द्वारा परमेश्वर ने कहा था कि यदि इस्राएली ''दीन होकर प्रार्थना करें और मेरे दर्शन के खोजी होकर अपनी बुरी चाल से फिरें, तो मैं स्वर्ग में से सुनकर उनका पाप क्षमा करूंगा और उनके देश को ज्यों का त्यों कर दूंगा'' (2 इतिहास 7:14)।

प्रमाण से पता चलता है कि परमेश्वर ने पुराने नियम के समय लोगों को क्षमा किया था। ऐसा वह यीशु की मृत्यु के आधार पर कर सकता था क्योंकि परमेश्वर के सामने उसकी मृत्यु होने से पहले भी उतनी ही निश्चित थी जितनी बाद में। परमेश्वर ने यीशु की मृत्यु की योजना बहुत पहले (यशायाह 53:4-12; प्रेरितों 2:23), अर्थात सृष्टि से भी पहले बनाई हुई थी (1 पतरस 1:18-20)।

यीशु की मृत्यु के द्वारा, परमेश्वर ने दिखाया कि वह पिछले पापों को क्षमा करने के लिए धर्मी है। ''जो पाप पहिले किए गए, और जिन की परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता से आनाकानी की; उन के विषय में वह अपनी धार्मिकता प्रगट करे'' (रोमियों 3:25ख)। यीशु की मृत्यु से न केवल उनके ही पाप क्षमा होते हैं जो नई वाचा के अधीन रहते हैं, बल्कि यह पहली वाचा के अधीन रहने वालों की क्षमा का भी आधार है। इस प्रकार इस्राएली भी अनन्त मीरास अर्थात उस आशीष को पा सकते थे जिसकी प्रतिज्ञा व्यवस्था में नहीं थी। ''और इसी कारण वह नई वाचा का मध्यस्थ है, ताकि उस मृत्यु के द्वारा जो पहिली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिए हुई है, बुलाए हुए लोग प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त मीरास को प्राप्त करें'' (इब्रानियों 9:15)।

परमेश्वर ने इस्राएलियों के पाप, व्यक्तिगत गुण या केवल बलिदानों के आधार पर नहीं बल्कि यीशु के लहू के आधार पर क्षमा किए जो सारे जगत के पापों के निमित्त बहाया गया था (1 यूहन्ना 2:2)। सब युगों में पापों की क्षमा यीशु के लहू के आधार पर होती है। ''और बिना लोहू बहाए क्षमा नहीं होती'' (इब्रानियों 9:22ख)। केवल यीशु का लहू ही है जो पापों की क्षमा दिला सकता है।

नये नियम के अधीन क्षमा

परमेश्वर के स्वभाव के बिल्कुल ही विपरीत होने के कारण पाप उसकी सबसे अधिक

अप्रसन्नता को बढ़ावा देता है:

> परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रकट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं (रोमियों 1:18)।
> क्योंकि तुम यह जानते हो, कि किसी व्यभिचारी, या अशुद्ध जन, या लोभी मनुष्य की, जो मूरत पूजने वाले के बराबर है, मसीह और परमेश्वर के राज्य में मीरास नहीं।
> कोई तुम्हें व्यर्थ बातों से धोखा न दे; क्योंकि इन ही कामों के कारण परमेश्वर का क्रोध आज्ञा न माननेवालों पर भड़कता है (इफिसियों 5:5, 6)।

> इसलिए अपने उन अंगों को मार डालो, जो पृथ्वी पर हैं, अर्थात व्यभिचार, अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी लालसा और लोभ को जो मूर्तिपूजा के बराबर है। इन ही के कारण परमेश्वर का प्रकोप आज्ञा न माननेवालों पर पड़ता है (कुलुस्सियों 3:5, 6)।

परमेश्वर का क्रोध बहा दिया जाएगा, क्योंकि प्रभु अधर्म से (इब्रानियों 1:9), जो कि पाप है (1 यूहन्ना 3:6) वैर रखता है।

पाप पर न केवल परमेश्वर का क्रोध ही बढ़ता है बल्कि यह हमें उससे अलग करके पराया भी कर देता है। पौलुस ने लिखा है, ''और उस ने अब उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा भी मेल कर लिया जो पहिले निकाले हुए थे और बुरे कामों के कारण मन से बैरी थे'' (कुलुस्सियों 1:21)। उसने यह भी लिखा कि जिन पापियों की क्षमा नहीं भी हुई, ''उस अज्ञानता के कारण जो उन में है और उनके मन की कठोरता के कारण वे परमेश्वर के जीवन से अलग किए हुए हैं'' (इफिसियों 4:18)। वे ''... मसीह से अलग और ... आशाहीन और जगत में ईश्वररहित'' (इफिसियों 2:12, 13), परमेश्वर के ''वैरी'' (रोमियों 5:10) हैं। याकूब ने लिखा कि ''जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है, वह अपने आपको परमेश्वर का वैरी बनाता है'' (याकूब 4:4ख)।

हमारी क्षमा के लिए यीशु का बलिदान

मनुष्य के कर्म और व्यवस्था के काम पाप या परमेश्वर के क्रोध को दूर नहीं कर सकते हैं। यदि ऐसा सम्भव होता, तो यीशु को क्रूस पर मरने की आवश्यकता नहीं थी। पौलुस ने लिखा है, ''मैं परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं ठहराता, क्योंकि यदि व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता होती, तो मसीह का मरना व्यर्थ होता'' (गलतियों 2:21)। उसने यह भी कहा था, ''कि जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हुई सब बातों के करने में स्थिर नहीं रहता, वह श्रापित है'' (गलतियों 3:10ख)। व्यवस्था में जानबूझ कर गलती करने की अनुमति नहीं थी; इसमें दया का कोई प्रावधान नहीं था (गलतियों 5:4; इब्रानियों 10:28)। ये सब केवल यीशु के लहू से ही उपलब्ध हो सकती हैं। पापों की क्षमा मनुष्य के किसी

प्रयास से नहीं हो सकती। जैसे एक पुराने गीत में कहा गया है, ''दिल के दाग को धोवे कौन ? लहू जो कि क्रूस से जारी।''[1] अपनी ओर से सही ढंग से उसकी बात माने बिना हमारे पाप नहीं धोए जा सकते; केवल यीशु का लहू ही हमारे पापों को धो सकता है।

हमारे पाप यीशु के लहू के द्वारा (मत्ती 26:28; 1 यूहन्ना 1:7; प्रकाशितवाक्य 1:5) नये और जीवित ढंग से क्षमा किए जाते हैं (इब्रानियों 10:19, 20)। अपना लहू बहाकर, उसने हमारे पापों का दाम चुका दिया (रोमियों 6:23; 1 पतरस 1:18-20) और परमेश्वर के क्रोध को हम से दूर करना सम्भव कर दिया। ''सो जब कि हम, अब उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे ?'' (रोमियों 5:9)। उसका लहू हमारे और परमेश्वर के बीच मेल को भी सम्भव बनाता है (कुलुस्सियों 1:20) ताकि यीशु हमें ''अपने सम्मुख पवित्र और निष्कलंक, और निर्दोष बनाकर उपस्थित करे'' (कुलुस्सियों 1:22)। ''इसी कारण, यीशु ने भी लोगों को अपने ही लोहू के द्वारा पवित्र करने के लिए फाटक के बाहर दुख उठाया'' (इब्रानियों 13:12)।

हमारा आज्ञा मानकर उत्तर देना

केवल यीशु का लहू ही हमें उद्धार दिला सकता है (प्रेरितों 4:12)। उस आत्मिक जीवन को पाने के लिए जो उसने सम्भव बनाया है, हमारे लिए उसमें भरोसा रखना आवश्यक है। हमें चाहिए कि हम उसकी बात मानकर उसके पीछे चलें। यूहन्ना 3:36 में लिखा है, ''जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।'' यह अनुवाद सही है जो अंग्रेज़ी के KJV के अनुवाद की तरह ही है, और NIV में इसका अनुवाद ''जो पुत्र को नकारता है'' किया गया है। यहां पर इस्तेमाल किया गया शब्द *apeitheo* जिसका अर्थ है ''आज्ञा न मानना''; इस आयत में वह *apisteo* शब्द नहीं है जिसका अर्थ ''विश्वास न करना'' है।

यीशु ''सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिए सदा काल के उद्धार का कारण हो गया'' (इब्रानियों 5:9)। यीशु कभी भी अपूर्ण नहीं था। ''सिद्ध'' शब्द *teleios* है जिसका अर्थ है ''अपनी मंजिल तक पहुंचना, पूर्ण होना।'' लहू बहाने से, मनुष्य के उद्धार का उसका काम पूरा हुआ (यूहन्ना 19:30)। हमारे उद्धार का दाम चुकाकर, वह उन सब के जो उसकी आज्ञा मानते हैं, उद्धार का कारण हो गया। सब प्रकार की क्षमा यीशु के लहू के आधार पर होती है, और इसके बिना सम्भव नहीं हो सकती, क्योंकि ''बिना लोहू बहाए क्षमा नहीं होती'' (इब्रानियों 9:22)।

हम जो कुछ भी कर सकते हैं उससे उद्धार उत्पन्न नहीं हो सकता; इसके विपरीत, यीशु उन लोगों को उद्धार देता है जो उसकी आज्ञा मानते हैं। हम अनुग्रह से अर्थात परमेश्वर की उस कृपा से जिसके हम योग्य नहीं थे अर्थात हमारे अपने कामों से नहीं बल्कि यीशु के काम से बचाए जाते हैं (इफिसियों 2:8, 9)। यीशु की इच्छा को मानकर, हम क्रूस पर उसकी मृत्यु से उसके लहू बहाए जाने से मिले उद्धार को पा सकते हैं। इसी को तो शुभ समाचार अर्थात सुसमाचार कहते हैं। जो यीशु

की आज्ञा नहीं मानता वह सुसमाचार की आज्ञा नहीं मानता, इसलिए वह प्रभु की उपस्थिति से दूर अनन्त विनाश में दण्ड पाएगा (2 थिस्सलुनीकियों 1:8, 9)।

यीशु हमारा प्रायश्चित अर्थात अनुग्रह का स्थान है, (इब्रानियों 9:5)जहां परमेश्वर हमसे मिलेगा और हमारे पापों को यीशु के लहू में हमारे विश्वास के द्वारा शुद्ध कर देगा (रोमियों 3:25)। हमारा विश्वास उसमें होना चाहिए जो यीशु ने हमारे लिए किया है न कि उसमें जो हम अपने आप परमेश्वर के लिए कर सकते हैं। हमारा उद्धार विश्वास के द्वारा अनुग्रह से होता है (इफिसियों 2:8, 9)। हम ''विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक'' (रोमियों 5:2) पहुंचते हैं।

परन्तु, यह विश्वास कि परमेश्वर हमें आशीष तो देगा ही, परमेश्वर की इच्छा को मानने के लिए हमें उत्साहित करता है। नई वाचा के अधीन, उस विश्वास की बात मानने के लिए जो शर्तें परमेश्वर ने दी हैं उनमें पश्चात्ताप (प्रेरितों 17:30), यीशु में विश्वास का अंगीकार (रोमियों 10:9, 10) और बपतिस्मा शामिल हैं (मरकुस 16:15, 16; प्रेरितों 2:38; 22:16; कुलुस्सियों 2:12, 13; 1 पतरस 3:21)।

जो कुछ यीशु हमसे चाहता है उसमें से कोई भी बात हमारे पापों को मिटा नहीं सकती। केवल यीशु का लहू ही ऐसा कर सकता है; फिर भी, जब तक हम आज्ञा नहीं मानते तब तक यीशु हमारे पापों को नहीं मिटाएगा। जिस प्रकार आगे बढ़ने, शोर मचाने, और नरसिंगा फूंकने से यरीहो की दीवारें नहीं गिरी थीं (इब्रानियों 11:30), वैसे ही हमारा विश्वास, पश्चात्ताप, अंगीकार, और बपतिस्मा हमारे पापों को मिटाने के लिए अपर्याप्त हैं। इस्राएलियों के विश्वास ने उन्हें परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए प्रेरित किया था और जब उन्होंने आज्ञा मान ली तो उन्हें उसका प्रतिफल भी मिला। इसी प्रकार, जब हम मन फिराते, अंगीकार करते और बपतिस्मा लेते हैं तो हमारे विश्वास को पुरस्कार मिलता है। परमेश्वर की इच्छा को मानकर, हम यह विश्वास करते हैं कि जो कुछ वह कर रहा है उससे उद्धार निकलेगा तो हमारा विश्वास हमारे अपने कामों पर नहीं है। पौलुस ने कहा है:

> उसी में तुम्हारा ऐसा खतना हुआ है, जो हाथ से नहीं होता, अर्थात मसीह का खतना, जिस से शारीरिक देह उतार दी जाती है। और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिस ने उस को मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे। और उसने तुम्हें भी, जो अपने अपराधों, और अपने शरीर की खतनारहित दशा में मुर्दा थे, उसके साथ जिलाया, और हमारे सब अपराधों को क्षमा किया (कुलुस्सियों 2:11-13)।

बपतिस्मे में उसके साथ गाड़े जाते समय हमारा विश्वास ''परमेश्वर के काम'' में होना चाहिए। यीशु को मुर्दों में से जिलाकर, परमेश्वर ने यीशु को मृत्यु से जीवन में लाने की अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया। जो कुछ परमेश्वर ने यीशु के पुनरुत्थान में किया उसके आधार पर, बपतिस्मा लेते समय हम नये जीवन में लाने की उसकी सामर्थ में हम विश्वास कर सकते हैं। क्योंकि परमेश्वर ने हमें बपतिस्मे में आत्मिक मृत्यु से जीवन की ओर लाने

की प्रतिज्ञा की है, इसलिए हम विश्वास कर सकते हैं कि जब हम बपतिस्मा ले रहे होते हैं, तो उसके काम से आत्मिक रूप से जीवित हो रहे होते हैं। बपतिस्मा लेते समय, हमें चाहिए कि हम परमेश्वर के काम में विश्वास रखें, न कि उस बात में जो हम कर रहे हैं। जब हम इस शर्त को पूरा कर लेते हैं, तो परमेश्वर हमें आत्मिक जीवन देकर हमारे अधर्मों को क्षमा कर देता है।

हमें न केवल यीशु के लहू में, नया जीवन देने और पापों की क्षमा के लिए परमेश्वर की शक्ति में विश्वास रखने के लिए कहा जाता है; बल्कि उससे भी आगे, परमेश्वर चाहता है कि हम अपने पिछले जीवन से मर जाएं ताकि हम यीशु के लिए नया जीवन जी सकें। बपतिस्मे में यीशु के साथ गाड़े जाने के समय हम अपने पिछले अतीत के लिए मर जाते हैं; फिर नये जीवन की चाल चल सकते हैं (रोमियों 6:4)। जब हम सुसमाचार में पाई जाने वाली शिक्षा को उसी रूप में हृदय से मान लेते हैं (रोमियों 6:17, 18), तो हमारा पुराना मनुष्य मसीह के साथ ''क्रूस पर चढ़ा दिया जाता'' है। परमेश्वर ने यह योजना बनाई थी ''ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें'' (रोमियों 6:6)।

हमारा विश्वास मसीह के प्रकट वचन से सीखकर होना चाहिए (रोमियों 10:17)। यीशु ने कहा था कि हमें भविष्यवक्ताओं के वचन के द्वारा उस पर विश्वास आता है (यूहन्ना 17:20)। इसका एक उदाहरण भले मन वाले बिरिया वासी हैं, जिन्होंने ''बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रतिदिन पवित्र शास्त्रों में ढूंढ़ते रहे कि ये बातें यों ही हैं, कि नहीं। सो उन में से बहुतों ने, और यूनानी कुलीन स्त्रियों में से, और पुरुषों में से बहुतेरों ने विश्वास किया'' (प्रेरितों 17:11, 12)।

मसीह में एक नया व्यक्ति

मसीह में/का बपतिस्मा लेकर (रोमियों 6:3; गलतियों 3:27) हम नये लोग बन जाते हैं (2 कुरिन्थियों 5:17)। जो लोग मसीह में हैं वे मसीह की एक देह हैं (रोमियों 12:5) जो कि कलीसिया है (इफिसियों 1:22, 23; कुलुस्सियों 1:18, 24)। बपतिस्मा हमें मसीह की उस एक देह का अंग बना देता है (1 कुरिन्थियों 12:13, 27)।

जब तक हम जल और आत्मा से नये सिरे से जन्म नहीं लेते तब तक हम परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते हैं (यूहन्ना 3:5)। नये सिरे से जन्म पाए हुए लोग ''पहलौठे'' हैं जिनसे कलीसिया (इब्रानियों 12:23), अर्थात मसीह की देह (इफिसियों 1:22, 23; कुलुस्सियों 1:18, 24) बनती है। वे मसीह के राज्य के नागरिक हैं (इफिसियों 2:19; कुलुस्सियों 1:13)। यह नई सृष्टि मसीह की वह कलीसिया बन जाती है, जिसे उसने बनाया (मत्ती 16:18) और जो उसके आगे समर्पित है (इफिसियों 5:24)। इस कलीसिया के सदस्यों से मसीह प्रेम करता है (इफिसियों 5:25) और एक दिन यह उसे दे दी जाएगी। उसने उन्हें बिना दाग या धब्बे या किसी ऐसी वस्तु से बनाया है, कि वे उसके लहू की सामर्थ से (देखिए कुलुस्सियों 1:20) पवित्र और निर्दोष हों (इफिसियों 5:27)।

सारांश

मसीह की नई वाचा के अधीन पापों की क्षमा पाने की शर्तें मूसा द्वारा दी गई व्यवस्था की शिक्षा से अलग हैं। इस्राएलियों को अपनी क्षमा के लिए सांकेतिक बलिदान के रूप में जानवरों का लहू इस्तेमाल करना पड़ता था, परन्तु उनके पापों की क्षमा यीशु के लहू से ही थी। उसी प्रकार, नये नियम के अधीन रहने वाले मसीहियों के पाप भी यीशु के लहू से ही क्षमा होते हैं जब वे उसके लहू में विश्वास करके उसकी शर्तों को मानते हैं।

इन शर्तों को पूरा करने के लिए, हमें अपने पापपूर्ण जीवन को बदलकर यीशु के लिए जीने का निश्चय कर, उसमें अपने विश्वास का अंगीकार करके बपतिस्मे में उसके साथ गाड़े जाकर जी उठना चाहिए (प्रेरितों 2:38; कुलुस्सियों 2:12)। मसीही बनने के बाद यदि हम रोशनी में चलें और अपने पापों को मानें तो उसका लहू हमें लगातार शुद्ध करता रहेगा (प्रेरितों 8:22; 1 यूहन्ना 1:7–9)। नई वाचा के अधीन क्षमा के लिए कोई और ढंग नहीं बताया गया है।

पाद टिप्पणी

[1]यह गीत रॉबर्ट लौरी के ''नथिंग बट द ब्लड'' का हिन्दी अनुवाद है। सांग्स ऑफ़ फ़ेथ एण्ड प्रेज़, कंम्पो. व सम्पा. आल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोनरो, ला.: हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)।

क्रूस पर डाकू के उद्धार की बात

बहुत से लोग नये नियम की स्पष्ट शिक्षा को इसलिए नकार देते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाए गए दो डाकुओं में से एक को बपतिस्मा लिए बिना ही उद्धार मिल गया था। नई वाचा के अधीन यह आदमी उद्धार पाने के लिए हमारा उदाहरण नहीं है। वास्तव में, परमेश्वर के साथ सही होने के लिए उसने न तो व्यवस्था और न ही यीशु की नई वाचा की शर्तों को पूरा किया था।

पृथ्वी पर रहते समय, यीशु ने जिसे जब चाहा, अपनी इच्छा से क्षमा कर दिया था। उदाहरण के लिए, उसने एक अधरंगी के पाप क्षमा किए (मत्ती 9:2-8; मरकुस 2:3-18; लूका 5:17-26) और एक स्त्री के पाप क्षमा किए जिसने उसके पांव धोए थे (लूका 7:44-50)। ये लोग विश्वासी थे, परन्तु क्षमा पाने के लिए उन्हें उस विश्वास की आवश्यकता नहीं थी जिसकी हमें है। हमारा विश्वास यीशु के लहू में (रोमियों 3:25) और उसके जी उठने में होना आवश्यक है (रोमियों 10:9)। इन लोगों को क्रूस पर उस अपराधी की तरह ही, व्यवस्था या यीशु की नई वाचा की शर्तों को माने बिना क्षमा मिल गई थी।

वे सब लोग जिन्हें यीशु ने क्षमा किया था नई वाचा के प्रभावी होने से पहले ही मर गए थे। यीशु के नाम में सब जातियों के लोगों में पापों की क्षमा के लिए मन फिराने का प्रचार अभी नहीं हुआ था (लूका 24:47)। इस कारण, इन लोगों ने उद्धार पाने के लिए नई वाचा की शर्तों को पूरा नहीं किया था। यीशु मसीह के नाम से क्षमा का प्रचार करने वाले पहले व्यक्ति, पतरस ने लोगों से कहा था, ''मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले और तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (प्रेरितों 2:38)। प्रेरितों के काम की पूरी पुस्तक में, सच्चे मन से सुसमाचार को मान लेने वालों ने, पतरस की आज्ञा को पूरा किया था (प्रेरितों 2:41; 8:12, 36-39; 9:18; 10:47, 48; 16:15, 33; 18:8)। क्षमा पाने के लिए सुसमाचार की आज्ञा मानने का हमारा उदाहरण ये लोग हैं, क्रूस पर चढ़ा वह डाकू नहीं। उन्होंने उस नई वाचा की आज्ञा मानी जिसे यीशु के लहू से अर्पित किया गया था, उन्होंने मरकुस 16:16 में यीशु की शिक्षा के अनुसार ही किया कि ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।''

हम कौन से युग में रहते हैं?

मसीही युग को दो अलग-अलग युगों में बांटकर, एक ''युग वाला'' ग्रुप बपतिस्मे सम्बन्धी अपनी शिक्षा में लगभग दूसरे सभी धार्मिक गुटों से अलग होता है। उनकी शिक्षा है कि पतरस जो यहूदियों का प्रेरित है, ने एक यहूदी युग के दौरान कर्मों से उद्धार का प्रचार किया था। वे दावा करते हैं कि इस युग के दौरान परमेश्वर ने पापों की क्षमा और उद्धार के लिए बपतिस्मे की शर्त रखी थी (प्रेरितों 2:38; 22:16; 1 पतरस 3:21)। वे यह भी दावा करते हैं कि कलीसिया में कुरनेलियुस के मित्रों तथा उसके परिवार के सदस्यों को लाने के साथ यह युग समाप्त हो गया। युग की इस शिक्षा के अनुसार, ये प्रथम अन्यजाति मसीही केवल विश्वास के द्वारा अनुग्रह से उद्धार के युग के प्रथम मसीही भी थे (पौलुस की सेवकाई को उसके द्वारा नये युग के रूप में बताने की दृष्टि से)। अब सब लोगों के बारे में कहा जाता है कि वे बाद के इस युग में रहते हैं।

ऐसा विचार पवित्र शास्त्र का उल्लंघन है। इब्रानियों 9:16, 17 में सिखाया गया है कि नई वाचा का आरम्भ यीशु की मृत्यु से हुआ और इसका प्रचार यरूशलेम से यीशु के नाम में आरम्भ हुआ (लूका 24:47)। सुसमाचार का पहला संदेश पिन्तेकुस्त के दिन सुनाया गया था (प्रेरितों 2)। युग का यह विचार पतरस की बातों को कि परमेश्वर ने यहूदी और अन्य जाति में कोई भेद नहीं रखा (प्रेरितों 15:8, 9) और यहूदी ''प्रभु यीशु के अनुग्रह से [वैसे ही] उद्धार पाएंगे; [जैसे अन्यजाति] भी पाएंगे'' (प्रेरितों 15:11) व्यर्थ कर देता है।

पौलुस द्वारा सुनाया गया सुसमाचार उसके मसीही बनने से पहले सुनाए गए सुसमाचार से भिन्न नहीं था। बल्कि, ''वह अब उसी धर्म का सुसमाचार सुनाता है, जिसे पहिले नाश करता था'' (गलतियों 1:23ख)। यहूदियों और अन्यजातियों को मसीह में बपतिस्मा लेने और उसे पहने पर सबको एक ही देह अर्थात मसीह की एक देह में मिला लिया गया था (गलतियों 3:27, 28)।